Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR, 2022, VOL- 9/70

मुख्य शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका

अभिषेक वर्मा

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र- 442001, ई-मेल : say2abhishek1996@gmail.com

Paper Received On: 25 APR 2022
Peer Reviewed On: 30 APR 2022
Published On: 1 MAY 2022

Abstract

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नॉवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) को 22 मार्च 2020 में वैश्विक महामारी प्रख्यापित किया। जिसने ऑनलाइन आधारित प्रणाली नामक एक वैश्विक प्रतिमान विस्थापन को जन्म दिया। शिक्षा के क्षेत्र में इस विस्थापन को ऑनलाइन शिक्षा के रूप में देखा जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा, जिसमें सभी भौगोलिक क्षेत्रों के शिक्षार्थियों को शिक्षा तक आसान पहुँच प्राप्त हो सके को सुनिश्चित करने की प्रवृत्ति होती है। जिसे शिक्षा में असमानताओं का समाधान हो सके। भारतीय सन्दर्भ में ऑनलाइन शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार एवं गैर सरकारी संस्थानों द्वारा अनेकों पोर्टलों, वेबसाइटों का संचालन एवं जागरूकता अभियानों को चलाया गया। जिसे एक प्रभावी ऑनलाइन शिक्षण वातावरण का निर्माण हो सके। विभिन्न विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों तक सभी के द्वारा अपने पाठ्यक्रमों को सरल एवं सहज रूप में ऑनलाइन भी प्रस्तुत किया गया। जिसने सीखने के स्वर्णिम अवसरों को भी निर्मित करने का प्रयास किया परन्तु भारत में डिजिटल डिवाइड की अवधारणा के साथ-साथ औसत से अधिक संख्या में शिक्षार्थी एवं शिक्षकों का ग्रामीण क्षेत्रों से होना, मध्यम इन्टरनेट कनेक्टिविटी गति, इन्टरनेट डाटा के मूल्यों की अधिकता, शिक्षक- शिक्षार्थी दोनों हेतु डिजिटल उपकरणों की कमी, ऑनलाइन के प्रति अप्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षार्थी आदि ऑनलाइन शिक्षा के प्रमुख अवरोधकों ने ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था को दूषित करने का कार्य किया हैं। इन सभी प्रयासों एवं अवरोधकों को केंद्र में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के बदलते दृष्टिकोण का समीक्षात्मक वर्णन इस शोध लेख में प्रस्तुत किया गया है।

पारिभाषिक शब्दावली- *डिजिटल एजुकेशन, ऑनलाइन शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षण।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना : आशाजनक भविष्य का स्वप्न कोरोना वायरस महामारी ने मानव अस्तित्व पर अनपेक्षित, अप्रत्याशित रूप से प्रतिघात किया है जहाँ विगत् दो वर्षों में इस काल रूपी महामारी ने मनुष्य के अस्तित्व को ही संकट में नहीं डाला अपितु मानव मुकुट की श्रेष्ठता पर भी एक प्रश्नचिह्न लगा दिया। कोरोना वायरस (कोविड-19) का संक्रमण स्थान चीन (वुहान सिटी) होने के बाद भी इसके विकसित होने के प्रमाण अभी

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भी अज्ञात हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा इसके प्रभावी संक्रमण को रोकने एवं मानव प्रजाति को सुरक्षित रखने के लिए 22 मार्च 2020 को सम्पूर्ण विश्व में इसे महामारी घोषित करते हुए सभी देशों को लॉकडाउन लगाने का आदेश दिया। जिसके फलस्वरूप मानवीय क्रियाविधियों को संचालित करने हेतु ऑनलाइन आधारित प्रणाली का सहारा लिया गया। इस प्रतिमान विस्थापन ने जहाँ बहुत-सी असुविधाओं को जन्म दिया हैं तो वही हमें न्यू नार्मल में विकसित होने एवं भविष्य में सम्पूर्णता में वृद्धि का अवसर भी प्रदान किया। शिक्षा के क्षेत्र में जहाँ लगभग 264 मिलियन बच्चों एवं किशोरों का नामांकन अभी भी विद्यालय में नहीं हुआ है (यूनेस्को, 2020), तथापि इस महामारी ने इस स्थिति को और भी खराब बना दिया है। आपातकाल के समय इसे क्रमबद्धता से संचालित करने के लिए सम्पूर्ण विश्व ने ऑनलाइन शिक्षा का सहारा लिया जो एक प्रकार की डिजिटल उपकरणों का शिक्षा के क्षेत्र में कॉपी पेस्ट प्रक्रिया है (मार्टिनेज, 2020)। शिक्षा में प्रभावी ऑनलाइन शिक्षण और अधिगम क्या है? यह प्रश्न एक दशक से सम्पूर्ण शिक्षा में कई बार उद्धृत हुआ है, यदा-कदा प्रयासों के अतिरिक्त अधिकतर ऑनलाइन आधारित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को आलोचना ही झेलनी पड़ी है। वर्ष 2020 के वसंत में, यह भावी प्रश्न कोविड-19 महामारी के कारण दुनिया के लिए एक जनादेश साबित हुआ। उस समय, ऐसा आभास हो रहा था कि न्यू नार्मल एजुकेशन सिस्टम की होड़ में अनेक विश्वविद्यालय अपने पारम्परिक कक्षागत शिक्षण आधारित पाठ्यक्रमों को ऑनलाइन वातावरण में प्रतिस्थापित करने में जल्दबाजी कर रहे है क्योंकि उनके द्वारा किये जा रहे प्रयासों में तकनीकी असक्षमता, अनुभवहीनता एवं अल्प प्रशिक्षण आदि प्रदर्शित हो रहा था इसके अतिरिक्त वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षण ने अपनी उपयोगिता को सामान्य रूप से स्थापित करने का प्रयास किया है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान समय में बढ़ रही ऑनलाइन शिक्षा की मांग भविष्य में नवीन अवसरों का सृजन करने में सहायक होगी। जिसके लिए शिक्षक, अभिभावकों, प्रबंधकों एवं सरकार समेत सभी को विचार करने की आवश्यकता हैं।

शिक्षा की वितरण प्रक्रिया

अधिगम-शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया को मूलतः तीन रूपों में देखा जा सकता हैं। प्रथम रूप, आमने-सामने की शिक्षा, जिसका सृजन हजारों वर्षों पूर्व हुआ। जिसमें एक ही समय, स्थान पर अधिक से अधिक शिक्षार्थियों को शिक्षित किया जाता है। शिक्षा के इस रूप को शिक्षण का स्वर्ण स्तर भी कहा जा सकता है इसके पश्चात संचार प्रौद्योगिकी के विस्तारित रूप के फलस्वरूप जन्मे स्क्रीन टू फेस शिक्षा व्यवस्था को शिक्षा का द्वितीय रूप कहा जा सकता है। जिसमें संचार प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर एवं नेटवर्क प्रौद्योगिकी की सहायता लेकर अधिगम- शिक्षण प्रक्रिया को रुचिकर एवं श्रेष्ठकर बनाने का प्रयास किया जाता है वहीं एकाएक परिवर्तित हुए ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था को शिक्षा के तृतीय रूप में देखा जा सकता

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है जिसमें डिजिटल आधारित उपकरण, मीटिंग वेबसाइट, एप्स, शैक्षिक चैनल, ऑनलाइन क्लासरूम आधारित वातावरण आदि की सहायता से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को संचालित किया जाने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा न्यू नार्मल का प्रमुख भाग है। वास्तव में शिक्षा के ये तीनों रूप यह प्रदर्शित करता हैं कि, शिक्षा की वितरण प्रक्रिया (असत्य) समसामयिक मान्यताओं पर आधारित होती हैं (उदाहरण के लिए, सीखना केवल तभी होता है जब आप कुछ शर्तों को पूरा करते हैं) जो स्थानीय या वैश्विक वास्तविकताओं और समाजों की जरूरतों से भिन्न होते हैं। अतः शिक्षित करना एवं होना प्रत्येक परिस्थिति में सम्भव हैं।

ऑनलाइन अधिगम में शिक्षार्थियों की भूमिका

ऑनलाइन अधिगम के स्वरूप में कई शब्दों की भूमिका रही है। ऑनलाइन अधिगम शब्द की उत्पति दूरस्थ शिक्षा से हुई है। प्रायः दूरस्थ शिक्षा से तात्पर्य भौतिक दूरी को समाप्त करते हुए शिक्षार्थी एवं शिक्षक के मध्य पारस्परिक संचार अंतःक्रिया को बनाये रखने से हैं। ऑनलाइन अधिगम एवं ई-अधिगम दूरस्थ शिक्षा का विकसित रूप माना जाता है। दोनों शब्दों का प्रमुख लक्ष्य इंटरनेट के उपयोग के माध्यम से शिक्षक-शिक्षार्थी के मध्य द्विगामी अंतःक्रिया सम्बन्ध का प्रतिनिधित्व करना हैं जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सके।

शिक्षण संस्थानों में ऑनलाइन अधिगम को मुख्यधारा से जोड़ना शिक्षा प्राप्त करने का उदारात्मक दृष्टिकोण माना जा सकता है क्योंकि यह विभिन्न प्रकार के प्रौद्योगिकी गतिविधियों का उपयोग करके शिक्षार्थियों के अधिगम वातावरण को समृद्ध बनाता है एवं शिक्षकों को शिक्षण में स्वायत्तता प्रदान करता है। सफल ऑनलाइन शिक्षण में पाठ्यवस्तु की गुणवत्ता एवं उसका अभिकल्पित रूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। ऑनलाइन अधिगम में सुदृढ़ता प्रदान करने में संस्थान की भूमिका सर्वोपरि होती है एवं उसके द्वारा शिक्षार्थियों को ऑनलाइन अभ्यास में प्रतिबद्धता तथा संतुष्टि प्रदान करने में सहायता की जाती है जिससे शिक्षार्थियों में अधिगम वातावरण के प्रति सामुदायिक भावना का सृजन होता है। अत्याधुनिक विशेषता से ओत-प्रोत होते हुए वर्तमान सन्दर्भ में प्राप्त शोध यह दृष्टिगोचर करते है कि ऑनलाइन शिक्षा प्रत्येक शिक्षार्थी को संतुष्ट करने में असमर्थ रही है जिसके लिए अधोलिखित कारण बताये गए हैं- ऑनलाइन शिक्षा के प्रति सामुदायिक असमझ, शिक्षार्थी की स्व-भावना, संसाधनों की अनुपलब्धता, अनभिज्ञता, निम्न स्तर का प्रशिक्षण, अरुचि एवं असंतोष की भावना (यूनेस्को, 2020, अगुइलेरा, 2020, वर्ल्ड बैंक, 2020)। इन्हीं कारणों से ऑनलाइन कक्षा में शालात्याग की दर में वृद्धि हुई है।

ऑनलाइन अधिगम में सामुदायिक भावना, शिक्षार्थी प्रतिबद्धता, एवं प्रोत्साहन को बनाये रखना प्रशिक्षकों के लिए कठिन कार्य हैं क्योंकि ऑनलाइन वातावरण की कक्षागत् अंतः क्रिया सामान्य कक्षागत्

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अंतःक्रिया से प्रायः भिन्न हैं (अगुइलेरा, 2020)। ऑनलाइन अधिगम में वृद्धि निरंतरता बनाये रखने, सामुदायिक भावना में वृद्धि करने एवं शिक्षार्थियों के सकारात्मक ऑनलाइन अधिगम अनुभव बनाये रखने हेतु प्रशिक्षकों को ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में ऑडियो-वीडियो व्याख्यान को शामिल करने के अतिरिक्त साथियों से संवाद हेतु समूह परिचर्चा, चैट सुविधा, प्रश्नोतरी सत्र एवं अन्य शैक्षणिक गतिविधियों को भी अपनाने पर विचार करना होगा(मागाल्हेस, 2020)।

ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता

उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा का निरंतर बढ़ता निवेश प्रारम्भ में खर्चीला एवं अनावश्यक प्रतीत हो रहा है लेकिन अगर हम इसके दूरगामी परिणामों की ओर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि ऑनलाइन अधिगम आगामी भविष्य में कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के लिए लागत प्रभावशीलता का प्रतिनिधित्व कर सकता है क्योंकि ऑनलाइन अधिगम एवं शिक्षण के लिए वृहद् भौतिक प्रांगण, अनावश्यक कार्मिकों एवं संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती है (मागाल्हेस, 2020)। केवल संभावित रूप से बढ़े हुए शिक्षार्थियों के नामांकन को समायोजित करने की आवश्यकता ही होगी। इन सभी शैक्षिक कक्षाओं को इंटरनेट कनेक्शन की सुविधा वाले किसी भी स्थान पर संचालित किया जा सकता है।

ऑनलाइन अधिगम के द्वारा शिक्षार्थियों तक विषय विशेषज्ञों की पहुँच आसानी से सम्भव हो सकेगी जिससे वे विषयवस्तु को प्रभावी ढंग से समझ सकते हैं एवं विषय से सम्बन्धित सामग्री को प्रिंट मीडिया के अतिरिक्त ऑनलाइन ऑडियो-वीडियो एवं डेटाबेस के रूप में भी संग्रहित कर सकते हैं। इसकी उपलब्धता से शिक्षार्थियों को पुनः अभ्यास के अवसर प्राप्त होते हैं (अगुइलेरा, 2020)।

ऑनलाइन अधिगम में शिक्षक-शिक्षार्थी अंतःक्रिया का स्वरुप प्रायः सामान्य कक्षाओं से भिन्न होता है इसलिए इन कक्षाओं में शिक्षक की भूमिका एक मेंटर, फैसिलिटेटर के रूप में होती है। नियमित आईसीटी उपकरणों के उपयोग से शिक्षकों के साभिप्राय (इरादतम्) व्यवहार में भी परिवर्तन होता है जिससे शिक्षकों का प्रौद्योगिकी कौशल एवं व्यावसायिक कौशल भी विकसित होता है जो शिक्षार्थियों की उपलब्धि में सकारात्मक परिवर्तन करने का प्रयास करता है (मार्टिनेज़, 2020)।

ऑनलाइन अधिगम शिक्षार्थियों को स्व-अनुशासन, विशिष्ट चयन की स्वतंत्रता एवं स्व-अधिगम की ओर प्रेरित करती है तथा यह शिक्षार्थियों को अपने पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षकों से अंतःक्रिया करने के लिए अधिक सहज महसूस करने का अवसर प्रदान करता है जो उनके अपने विचारों को अधिक सुदृढ़ बनाने में तथा सकारात्मक ढंग से अधिगम में संलग्न होने का समय देता है। इससे शिक्षार्थियों की अंतःक्रिया की गुणवत्ता में सुधार होता है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन अधिगम सांस्कृतिक और विविधतापूर्ण आबादी के साथ जुड़ने के लिए निष्पक्ष स्तर प्रदान करता है क्योंकि

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपस्थिति, लिंग, जातीयता, सामाजिक-आर्थिक स्तर और अन्य बाहरी कारकों के कारण भौतिक एवं अभौतिक भेदभाव उत्पन्न हो सकता है। जो शिक्षार्थियों की उपलब्धि स्तर को प्रभावित करता है (लावी एवं अन्य, 2020)।

ऑनलाइन शिक्षा के प्रति भारत की पहल

वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने कुछ पुराने ऑनलाइन आधारित शिक्षण-अधिगम कार्यक्रमों को नवीन रूप प्रदान किया हैं, तो कुछ नए कार्यक्रमों का सृजन भी किया गया हैं। स्वयं (स्टडी वेब ऑफ़ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्प्रिंग माइंडस) पोर्टल (जो कक्षा 9 से परास्नातक तक के शिक्षार्थियों को निशुल्क शिक्षा प्रदान करता हैं।) एवं स्वयं प्रभा के सभी 32 डी.टी.एच. चैनलों (जो सामूहिक रूप में सप्ताह भर रिकार्डेड एवं लाइव माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण करेंगे) को विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखते हुए ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने के लिए निर्देशित किया गया। इसी क्रम में वार्षिक रिफ्रेशर प्रोग्राम इन टीचिंग (अर्पित) नामक ऑनलाइन व्यावसायिक विकास कार्यक्रम एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा ई-पीजी पाठशाला (जो 70 विषयों में उच्च गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम आधारित इंटरैक्टिव ई-सामग्री प्रदान करता है।) के लिए जागरूकता कार्यक्रम को भी एम.एच.आर.डी. द्वारा प्रभाव में लाया गया इसके अतिरिक्त नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी (एन.डी.एल.), फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर फॉर एजुकेशन (एफ.ओ.एस.एस.ई.), वर्चुअल लैब्स, ई-यंत्र, दीक्षा (नेशनल डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर टीचर्स), शिक्षावाणी (रेडियो चैनल), पी.एम. ई-विद्या आदि डिजिटल पहल के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा को प्रभावकारी बनाया जा रहा है (एम.एच.आर.डी. 2020) इसलिए यह कहा जा सकता है कि हम ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियों और संभावनाओं में निरंतर सुधार करने का प्रयास कर रहे हैं। कोरोना वायरस महामारी के पश्चात यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आने वाले समय में शिक्षार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, हस्त-अनुभव, प्रयोगशाला कार्य, पुस्तकालय अनुभव, सहकर्मी ट्यूशन, उपचारात्मक शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार सहित शैक्षिक कठिनाइयों की कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा यहाँ यह प्रश्न भी सृजित होता हैं कि क्या कोविड-19 महामारी के पश्चात ऑनलाइन शिक्षा को प्रभावकारी रूप प्रदान किया जायेगा? क्या भविष्य के लिए ऑनलाइन शिक्षा को पारम्परिक शिक्षा के साथ सामान्य रूप में प्रदान किया जायेगा? यह विचारणीय हैं। हालाँकि हमारी नई शिक्षा नीति 2020 के खंड 24 में इस बात की पुष्टि की गयी हैं कि, भविष्य के लिए शिक्षा को डिजिटल रूप प्रदान किया जाएगा। लेकिन यह तभी सम्भव हो सकता है जब हम ऑनलाइन शिक्षा को समालोचित रूप से देखने का प्रयास करें एवं अंतिम समाधान के रूप में ऑनलाइन और ऑफलाइन अधिगम कक्षाओं (हाइब्रिड मोड) का संतुलन बनाया जाये।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ

सामान्य रूप में ऑनलाइन शिक्षा ऑनलाइन साधनों के उपयोग पर बल देती हैं तथापि इन संसाधनों का उपयोग करके एक गुणात्मक शिक्षा व्यवस्था का सृजन किया जा सकता हैं । ऑनलाइन शिक्षा शिक्षक-शिक्षार्थी दोनों को ऑनलाइन वेबसाइट, ई-बुक्स, ब्लॉग, पेपर आदि के माध्यम से विषयवस्तु को एकत्रित एवं निर्मित करने के लिए प्रेरित करने में, संलग्नता में वृद्धि करने में, विशेष शिक्षार्थियों की समस्याओं के समाधान में, ऑनलाइन कक्षाओं को रिकॉर्ड करके पुनः उपयोग करने में, विभिन्न सीखने के विकल्पों का पता लगाने में, शिक्षकों के व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास को नवीनता से विकसित करने में सहायक होती हैं। इस नवीन प्रतिमान के माध्यम से शिक्षक एक ही समय में अधिक से अधिक शिक्षार्थियों के साथ एक ही समय में आभासी अंतःक्रिया कर सकता हैं। विश्वविद्यालयों में नई प्रौद्योगिकी का उन्नयन होने से विश्वविद्यालय स्तर की व्यवस्था प्रणाली एवं अधिगम- शिक्षण प्रणाली दोनों में सुधार करने, नवीन ऑनलाइन कोर्सेज संचालित करने में सक्षम हो सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा की प्रमुख चुनौतियाँ

ऑनलाइन शिक्षा प्रारम्भ से ही वैकल्पिक शिक्षा का एक प्रतिरूप रहा हैं। जिसके कारण इस पर ध्यान केन्द्रण प्रारम्भ से ही कम रहा हैं । लेकिन कोविड-19 महामारी ने इसे मुख्य शिक्षा की धारा में जोड़ते हुए सभी देशों की ऑनलाइन शिक्षा की स्थिति एवं संचालन क्षमता को सभी के समक्ष प्रस्तुत कर दिया हैं जिसे विकसित देश से लेकर भारत समेत विकासशील देश भी शामिल हैं। जिसमें डिजिटल उपकरणों, संसाधनों, इन्टरनेट कनेक्टिविटी तथा उपयुक्त ऑनलाइन परिवेश की कमी जैसी सामान्य चुनौतियाँ के साथ- साथ कुछ विशिष्ट चुनौतियाँ भी हैं। भारत में ग्रामीण बाहुल्य क्षेत्र होने कारण भी ऑनलाइन परिवेश की उपयुक्तता विचारणीय हैं। डिजिटल उपकरण की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में भी ऑनलाइन शिक्षा के प्रति जागरूकता, तत्परता में कमी, संचालन कौशल एवं प्रशिक्षण में कमी पायी गयी हैं (ए.एस.एस.ओ.सी.एच.ए.एम., 2020)। इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी-शिक्षक संलग्नता, तनावपूर्ण वातावरण, बिजली आपूर्ति, शिक्षार्थी भूतपूर्व अनुभव, शिक्षार्थियों के व्यवहारिक प्रशिक्षण में कमी, विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण की समस्या, शिक्षा के प्रायोगिक रूप की अनुपलब्धता, संस्कृति वातावरण, अकुशल शैक्षणिक ढांचा, डिजिटल थकान, डिजिटल डर एवं मूल्यांकन के सीमित अवसर आदि अनेक नकारात्मक कारक भी ऑनलाइन शिक्षा को दूषित करते हैं।

निष्कर्ष

तकनीकी विकास एवं बदलती शैक्षिक प्रवृत्तियों ने माध्यमिक शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने एवं विद्यार्थियों को शिक्षण

प्रदान करने की मांग में वृद्धि हुई है। ऑनलाइन शिक्षा की इस मांग का कारण ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का डिजिटल डिजाइन, उसे वितरित करने का तरीका समुदाय विशेष तक शिक्षा की पहुंच एवं शीघ्र प्रतिपुष्टि, ऑनलाइन शिक्षा की ओर अधिगमकर्ताओं को उन्मुख कर रही है । पाठ्यक्रम की सामग्री और प्रासंगिकता में छात्रों की रुचि पाठ्यक्रम के लिए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए, उनके कार्य प्रदर्शन को प्रभावित करती है। शिक्षकों एवं संकाय सदस्यों को ऑनलाइन शिक्षण को स्वीकार करने के लिए अपनी शिक्षण संबंधी भूमिकाओं को समझना होगा एवं अपने अनुभव का प्रयोग करते हुए तकनीकी जागरूकता को भी शिक्षण कार्य में प्रयोग करने की आवश्यकता होगी । ऑनलाइन शिक्षण में शिक्षक केवल शिक्षक ना होकर, एक विशिष्ट शोधार्थी (विषय संबंधी जानकार), कंटेंट फैसिलिटेटर, प्रोसेस फैसिलिटेटर, टेक्नोलॉजिस्ट डिजाइनर, प्रबंधक एवं व्यवस्थापक, निर्देशक एवं परामर्शदाता एवं मूल्यांकनकर्त्ता की भूमिका को भी निभाता है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन शिक्षण में शिक्षक सीखने की प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय रूप से संलग्न करते हैं, जो ऑनलाइन प्रोग्राम को स्थापित करने एवं उससे प्रभावी रूप से संचालित कराने में अहम योगदान प्रदान करते हैं। ऑनलाइन शिक्षा एवं ऑनलाइन माध्यम में शिक्षण प्रदान करना दोनों एक योजनाबद्ध शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसे बिना किसी प्रशिक्षक कार्यक्रमों के नहीं किया जाना चाहिए अतः ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है कि शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने एवं शिक्षण प्रदान करने में समर्थ है। अंततोगत्वा शिक्षा का यह नवीन रूप अभी भी पुलकित अवस्था में विराजमान हैं। जिसे अत्यधिक शोध के माध्यम से परिष्कृत किया जाना शेष हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अगुइलेरा-हेर्मिदा, पी. ए. (2020). कॉलेज स्टूडेंट्स यूज एंड एक्सेप्टेंशन ऑफ़ इमरजेंसी ऑनलाइन लर्निंग ड्यू टू कोविड-19. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च ओपन.

ए.एस.एस.ओ.सी.एच.ए.एम. (2020). डिजिटलाइजेशन ऑफ़ एजुकेशन: ए रेडीनेस सर्वे गुड स्टार्ट बट माइल्स टू गो, प्राइम्स पार्टनर्स, 1-14

एमएचआरडी नोटिस (20 मार्च, 2020). कोविड-19 स्टे सेफ: डिजिटल इनिशिएटिव.

मागाल्हेस, पी., फेरेइरा, डी., कन्हा, जे., एवं रोसारियो. पी. (2020). ऑनलाइन वर्सेज ट्रेडिशनल होमवर्क: ए सिस्टेमेटिक रिव्यू ऑन द बेनेफिट्स टू स्टूडेंट्स परफॉर्मेंस. कंप्यूटर एंड एजुकेशन, 152.

मार्टिनेज़, जे. (2020). टेक दिस पेंड़ेमिक मोमेंट टू इम्प्रूव एजुकेशन. एडुसोर्स.

यूनेस्को आईईएसएएलसी (2020). कोविड-19 एंड हायर एजुकेशन: टुडे एंड टूमारो. इम्पैक्ट एनालिसिस, पालिसी रेस्पोंसेस एंड रिकमेन्डेशन.

लावी, एस., एवं नामा-घानाविम, ई. (2020). वाय केयर अबाउट कैरिंग ? लिंकिंग टीचर्स केरिंग एंड सेंस ऑफ़ मीनिंग एट वर्क विद़ स्टूडेंट्स सेल्फ-एस्टीम, वेल-बिंग, एंड स्कूल इंगेजमेंट. टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन, 91.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वर्ल्ड बैंक. (2020). रिमोट लर्निंग एंड कोविड-19 द यूज ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजीज़ एट स्केल एक्रॉस एन एजुकेशन सिस्टम एज ए रिजल्ट ऑफ़ मैसिव स्कूल क्लोसिंग्स इन रिस्पांस टू द कोविड-19 पेंड़ेमिक टू इनेबल डिस्टेंस एजुकेशन एंड ऑनलाइन लर्निंग.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies